212 P
771
M
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1269
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 771

20/11
891.431
G128S

32
19.12.31
Saihid-e-Naz
77

शहीदेनाज़

श्रीयुत पण्डित गेंदालाल "दीक्षित"

१०००] प्रकाशकः-लक्ष्मण "पथिक" [मू० =)॥

केवल टाइटिल पेज, राजेन्द्र प्रिण्टिङ्ग प्रेस, देहली में छपा।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
18 FEB. 1932

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 771
Date 21-12-71
GOVT. OF INDIA

॥ ओ३म् ॥

मातृ-वन्दना १

पाला म् सुफलाम् मलयज शीतलाम् शस्य श्या..लाम् मातरम् ।

शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्

फुल्ल-कुसमित-द्रुम दल शोभिनीम्

सुहासिनीम् सुमधुर भाषणीम्

सुखदाम् वरदाम् मातरम् ॥ वन्दे० ॥

त्रिंशं कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले,

द्वि-त्रिंश-कोटि भुजै-धृत खर करवाले,

केवले मां तुमि अबले ।

बहु बल धारिणीम् नमामि तारिणीम्

रिपु दल वारिणीम मातरम ॥ वन्देमातरम् ॥

वन्देमातरम् २

क़ौम के ख़ादिम की है, जागीर वन्देमातरम ।

है वतन के वास्ते, अक्सीर व देमातरम ।

ज़ालिमों को है उधर बन्दूक पर अपनी ग़रूर ।

है इधर हम बेकसों का, तीर वन्देमातरम ॥

क़त्ल की हमको न दें धमकी हमारे सब से ।

तेग़ पर हो जायगी, तहरीर बन्देमातरम ॥
किस तरह भूलूं इसे मैं, जबकि क़िस्मत में मेरी।
लिख चुका है हाकिमे, तक़दीर बन्देमातरम ॥
फ़िक्र क्या जल्लाद ने गर क़त्ल पर बांधी कमर।
रोक देगा दूर से, शमशीर बन्देमातरम ॥
तुमसे गर कर दिया, ख़ामोश मुझको देखना।
बोल उठेगी मेरी तस्वीर बन्देमातरम ॥
सर ज़मीं इंगलैण्डकी हिल जायगी दो रोज़में।
गर दिखायेगी कभी, तासीर बन्देमातरम ॥
सन्तरी भी मुतज़्ज़िब थे जबकि हर झन्कारपर।
बोलती थी जेल में, जंजीर बन्देमातरम ॥

गज़ल ३

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलामखाना।
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना ॥
खूं खोलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमोंका हम बन्द ज़ुल्म ढाना ॥
क़ौमी तिरंगे झण्डे पर जां निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना ॥
अब भेड़ और बकरी बनकर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मतीका होगा कहीं ठिकाना ॥
परवाह अब किसे है जेलो औ दमन की प्यारो।

एक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना ॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे ।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

गज़ल ४

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।
देखना है जोर कितना बाजुए क़ातिल में है ॥
रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
लज्जते सहरानवर्दी दूरिये मंजिल में है ॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्मां ।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है ॥
आज फिर मक़तलमें क़ातिल कह रहा है बार बार ।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है ॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार ।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैर की महफिल में है ॥
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़ ।
सिर्फ मिट जानेकी हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है ॥

पुष्प हृदय ५

चाह नहीं है सुर बाला के गहनों में गूंथा जाऊं ।
चाह नहीं है प्यारो के गल पड़ूं हारमें ललचाऊं ॥
चाह नहीं है राजाओं के शव पर मैं डाला जाऊं ।
चाह नहीं है देवोंके सिर चढ़ूं भाग्य पर इतराऊं ॥

मुझे तोड़ कर हे बनमाली
उस पथ में तू देना फेंक ।
मातृभूमि हित शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक ॥

अलीपुर बम्ब केस के अभियुक्त दे

श्री श्री उपेन्द्रनाथजी के कालेपानी जाते समय के उद्गार जिनको श्री रामप्रसाद बिस्मिल कालकोठरी के अन्दर गाया करते थे।

हैफ जिसपै कि हम तैय्यार थे मर जाने को ।
यकायक हम से छुड़ाया उसी काशाने को ॥
आसमां क्या यहां बाकी था गजब ढाने को ।
क्या कोई और बहाना न था तरसाने को ॥
लाके गुर्बत में जो रक्खा हमें तड़फाने को ॥ १ ॥
फिर न गुलशन में हमें लायेगा सैय्याद कभी ।
क्यों सुनेगा तू हमारी कोई फरियाद कभी ॥
याद आयेगा किसे यह दिले नाशाद कभी ।
हम भी इस बागमें थे कैद से आजाद कभी ॥
अब तो काहे को मिलेगी यह हवा खाने को ॥ २ ॥
दिल फिदा करते हैं कुर्बान जिगर करते हैं ।
पास जो कुछ है वह माता की नजर करते हैं ॥
खान वीरान कहां देखिये घर करते हैं ।
खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं ॥

आके आबाद करेंगे किसी वीराने को ॥ ३ ॥
देखिये कब यह असीराने मुसीबत छूटें।
मादरे हिन्द के अब भाग खुलें या फूटें ॥
देश सेवक सभी अब जेल में मूंजे कूटें।
आप यहां ऐश से दिन रात बहारें लूटें ॥
क्यों न तरजीह दें इस जीने से मर जाने को ॥ ४ ॥
कोई माता की उम्मीदों पै न डाले पानी।
ज़िन्दगी भर को हमें भेज दे के कालेपानी ॥
मुंह में जल्लाद हुए जाते हैं छाले पानी।
आबे खंजर का पिला कर के दुआले पानी ॥
भर न क्यों जायें हम इस उम्र के पैमाने को ॥ ५ ॥
हम भी आराम उठा सकते थे घरपर रहकर।
हमको भी पाला था मां बापने दुख सह सहकर ॥
वक्ते रुख़सत उन्हें इतना भी न आये कह कर।
गोदमें आंसू कभी टपके जो रुख़ से बहकर ॥
तिफ़ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को ॥ ६ ॥
देश सेवाका ही बहता है लहू नस नस में।
अब तो खा बैठे हैं चित्तौड़ के गढ़की क़समें ॥
सर फरोशी की अदा होती हैं यों ही रसमें।
भाई ख़ंजर से गले मिलते हैं सब आपस में ॥
बहिनें तैयार चिताओं में हैं जल जाने को ॥ ७ ॥

नौजवानों जो तबीयत में तुम्हारी खटके ।
याद कर लेना कभी हमको भी भूले भटके ॥
आप के अज़्वे बदन होवें जुदा कट कट के ।
और सद्चाक हो माताका कलेजा फटके ॥
पर न माथे पै शिकन आये क़सम खाने को ॥ ८ ॥
अपनी किस्मत में अज़ल से ही सितम रक्खा था ।
रंज रक्खा था महिन रक्खी था ग़म रक्खा था ॥
किसको परवाह थी और किसमें यह दम रक्खा था ।
हमने जब वादिये गुरबत में कदम रक्खा था ॥
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को ॥ ९ ॥
अपना कुछ ग़म नहीं लेकिन यह ख्याल आता है ।
मादरे हिन्द पै कबतक जवाल आता है ॥
हरदयालआता है योरूपसे न अजीत आता ।
कौम अपनी पै तो रो रोके मलाल आता है ॥
मुन्तज़िर रहते हैं हम खाक में मिल जानेको ॥ १० ॥
मैकदा किसका हैं यह जाने सबू किसका है ।
वार किसका है मेरी जां यह गुलू किसका है ॥
जो बहे कौम की खातिर वह लहू किसका है ।
आसमां स.फ बतादे तू अदू किसका है ॥
क्यों नये रंग बदलता है यह तड़फाने को ॥ ११ ॥
दर्द मन्दों से मुसीबत की हलावत पूछो ।

मरने वालों से ज़रा लुत्फ़ शहादत पूछो।
चश्मे मुशताक़ से कुछ दीद की हसरत पूछो।
सोज़ कहते हैं किसे पूछो तो परवाने को। ॥१२॥
बात तो जब है कि इस बात की ज़िदें ठाने।
देश के वास्ते कुरबान करें सब जानें॥
लाख समझायें कोई एक न उसकी माने।
कहता है खून से मत अपना गरेवां साने॥
नासहा आग लगे तेरे इस समझाने को॥१३॥
न मयस्सर हुआ राहत में कभी मेल हमें।
जान पर खेल के भाया न कोई खेल हमें॥
एक दिन को भी न मंज़ूर हुई बेल हमें।
याद आयेगा अलीपुर का बहुत जेल हमें॥
लोग तो भूल ही जायेंगे इस अफ़साने को॥ ॥१४॥
अब तो हम डाल चुके अपने गले में झोली।
एक होती है फ़क़ीरों की हमेशा बोली॥
खून से फाग रचायेगी हमारी टोली।
जब से बंगाल में खेले हैं कन्हैया होली॥
कोई उस दिन से नहीं पूछता बरसाने को॥१५॥
नौ जवानों यही मौक़ा है उठो खुल खेलो।
ख़िदमते क़ौम में जो आये बला तुम झेलो॥

ईश के सदक़े में माता को जवानी दे दो ।
फिर मिलेंगी न यह माता की दुआयें लेलो ॥
देखें कौन आता है इरशाद बजा लाने को ॥६॥

अच्छे दिन आनेवाले हैं ७

ऐ मादरे हिन्द न हो गमगीन अच्छे दिन आने वाले हैं
आजादी का पैगाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं ॥
माँ तुझको जिन जल्लादों ने, दी है तकलीफ ज़ईफ़ी में ।
मायूस न हो मगरूरों को, हम मजा चखाने वाले हैं ॥
कमजोर हैं और मुफलिस हैं हम, गो कुन्जे क़फ़स में बेबस हैं
बेकस हैं लाख मगर माता, हम आफ़त के परकाले हैं ॥
हिन्दू और मुस्लिम मिल करके, चाहें जो कर सकते हैं ॥
ऐ चर्ख़े कुहन हुशियार हो तू, पुरशोर हमारे नाले हैं ॥
मां! रूह को करना कैद कफ़स इमकान से बाहर है उनके ।
आज़ाद है अपना दिल शैदा, गो लाख ज़ुबां पर ताले हैं
मग़लूब जो हैं होंगे ग़ालिब, महकूम जो हैं होंगे हाकिम ।
सदा एक सा वक्त रहा किसका, कुदरत के तौर निराले हैं
गांधी ने तर्के ताआउन का यह कैसा मन्त्र चलाया है ।
लरज़ां है जिससे अर्श, समां, सरकार को जान के लाले हैं

वीर गर्जना ८

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना ।

प्यारे वतन को इस दम अजाद है बनाना ॥
मत बुजदिली को हरगिज तुम पास दो फटकने ।
आखिर तो दम अदमको होगा कभी रवाना ।
स्वतन्त्रता देवी के तुम जल्दी बनो उपासक ॥
निज पूरवजों का तुमको गरनाम है चलाना।
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब भारतका अन्न खाना ॥
दृढ सत्य पर रहो तुम धारन करो अहिंसा
आवेश के जोश में तुम हुल्लड नहीं मचना ।
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित ॥
धार्मिक वीर बनो अब छोड दो बहाना ।
दिल में झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त जेली खाना
"सरजू, समय यही है कुछ करलो देश सेवा
दो दिन की जिन्दगी है इसका नहीं ठिकाना

गज़ल १

[काकोरी के शहीद भाई अशफाकउल्ला खाँ अपना उपनाम कविता में हसरत रखते थे]

बुजदिलों को ही सदा मौत से डरतेदेखा,
गो कि सौ बार उन्हें रोज ही मरते देखा॥
मौत से वीर को हमने नहीं डरते देखा ॥

तखसए मौत पर भी खेल ही करते देखा ॥
मौत एक बार जब आना है तो डरना क्या है
हम सदा खेल ही समझा किये मरना क्या है
वतन हमेशा रहे शाद काम और आजाद,
हमारा क्या है, अगर हम रहे रहे न रहे

चिनगारियां १०

होना मत भय भीत मृत्यु से, कायरता है, दुख है।
हंस हंस चढ़ना बलि वेदी पर निर्भयता है, सुख है ॥
क्यों होते भय भीत मृत्यु से आत्मा अजर, अमर है ।
बलि वेदी पर चढ़ो वीर ! 'जयमाल' तुम्हारे गल है ॥
'शिवा' 'प्रताप' समान 'देश' पर शीश प्रसून चढ़ादो।
स्वतन्त्रता के अमर शहीदों में निज नाम लिखादो ॥
प्राणों पर इतनी ममता और स्वतन्त्रता का सौदा।
बिना तेल के दीप जलाने का यह कठिन मसौदा ॥
मोती बिखरते बीतेगी अलती जीवन घड़ियाँ ।
बिना चढ़ाये शीश नहीं टूटेंगी मां की कड़ियां॥
दुनिया में जीने का सबसे सुन्दर मधुर तक़ाज़ा।
हे शहीद ! उठने दें अपना फूलों भरा जनाज़ा ॥

शहीदों का सन्देश ११

दिन खून का हमारे, प्यारे ! न भूल जाना ।
ख़ुशियों में अपनी हम पर आंसू बहाते जाना ॥

सैयाद ने हमारे चुन चुन के फूल तोड़े
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना ॥
गोली को खाके सोये जलियान बाग में हम।
सूनी पड़ी कब्र पर दीया जलाते जाना ॥
हिन्दू मुसलिमों की होती है आज होली
बहते हमारे रंग में दाम भिगोते जाना ॥
कुछ कैद में पड़े हैं हम कब्र में बढ़े हैं ।
दो बूंद आँसू इन पर प्यारे बहाते जाना ॥

गज़ल १२

सर फरोशाने वतन फिर देख लो मकतल में हैं।
मुल्क पर कुर्बान हो जाने के अरमां दिलमें हैं॥
तेग है जालिम की यारों और गला मजलूम का।
देख लेंगे होसिला कितना दिले कातिल में हैं॥
सोरे महशर बापा है मारका है धूमका।
बलबले जोश शहादत हर रगे बिस्मिल में है॥

गज़ल १३

कुछ आरजू नहीं है है आरजू तो यह है।
रखदे कोई जरा सी खाके वतन कफन में॥
ए पुख्तकार-उलफत हुशियार डिग न जाना।
मेराज आशकां है इस दार और रसन में॥

यह मौत जिन्दगी है दुनियाका सब तमाशा ।
फरमान कृष्ण का था अर्जुनको बीच रण में ॥
अफसोस ! क्यों नहीं है वह रूह अब वतन में ।
जिसने हिला दिया था दुनिया को एक पल में ॥
सैय्याद जुल्म पेशा आया है जबसे हसरत ।
हैं बुलबुलें कफस में जागो-जगन चमन में ॥

गजल १४

यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रों बार भी ।
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊँ कभी ॥
हे ईश ! भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो ।
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो ॥
मरते बिस्मिल, रोशन लहरी, अशफाक अत्याचार से ।
पैदा होंगे सैकड़ों उनकी रुधिर की धार से ॥
उन के प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देशका ।
तब नाश होगा सर्वथा दुख शोकके लवलेश का ॥

गजल १५

मिट गया जब मिटने वाला फिर सलाम आया तो क्या ?
दिलकी बरबादी के बाद उनका पयाम आया तो क्या ?
काश अपनी जिन्दगी में हम यह मंजर देखते ।
यूं सरे तुरबत कोई महशर खराम आया तो क्या ?

मिट गई सारी उम्मीदें मिट गये सारे खयाल।
उस घड़ी गर नामवर लेकर पयाम आया तो क्या ?
ऐ ! दिले नाकाम मिट जा अब तू कूंचे यार में।
फिर मेरी नाकामियों के बाद काम आया तो क्या ?
आखिरी शबदीद के काबिल थी बिस्मिलकी तड़प।
सुबह दम गर कोई बालाये बाम आया तो क्या !

गजल १६

मत रो मां तेरे चरणों पर कर दूंगा जीवन बलिहार।
हृदय रक्त जल से धो दूंगा बरती हुई आंसूकी धार॥
शीश चढ़ा दूंगा मां तेरे पद कमलों पर पुष्प समान।
पद पखार दूंगा शोणित से किन्तु न होने दूंगा म्लानि।
देखूं कौन देखता है अब जननी तुझको नयन तरेर।
भय के दिन अब बीत गये मां नहीं सुदिनकी अब है देर।
कट जायेंगे तेरे बन्धन पहनेगी तू जयका हार।
मत रो मां अब शेष रहे हैं दुखके दिन बस दो ही चार॥

जेलकी काल कोठरी से १७

निर्वासन काले पानी से जरा न भय मानूंगा मैं।
भूखे बिना अन्न पानी रह गीत बना गाऊँगा मैं॥
फाँसी पर दे चढ़ा अरे हंसते हंसते झूलूंगा मैं।

बोटी बोटी मांस नोच ले आह नहीं बोलूंगा मैं ।
आती सन सन सन गोलीको छातीमें टुकराऊँ मैं ।
'क्रान्तिविजय' 'साम्राज्य नाश' यह शब्द नहीं छोड़ूंगा मैं ।

गजल १८

माताएं अब करें न ममता देश प्रेम मतवालोंकी ।
पिता न मोह करें पुत्रोंका बलि दें अपने लालों की ॥
वीर पत्नियां बनें न बाधक पतियोंको वह बिदा करें ।
आजादी ले आओ कहकर फर्ज प्रेमसे अदा करें ॥

गजल

बांध ले बिस्तर फिरंगिया राज अब जाने को है ।
ज़ुल्म काफी कर चुके हरदियाज़ अब आने को है ॥
गोलियां तो खा चुके हैं तोप भी हम देखलें ।
मर मिटेंगे मुल्क पर फिर इन्कलाब आने को है ॥
शाह हमारा जेल में है कौम का वह ना खुदा ।
जेलखाने तोड़ देंगे यह हवा चलने को है ॥
कह रहे हैं बाबा गांधी मान लो शर्तें तमाम ।
वरना फिर तख्ता हुकूमत का पलट जाने को है ॥
आयगा है कूद कर वह जंग में शेर पटेल ।
देखेना अब राजशाही बेनकाब होने को है ॥

लिख दई गांधी ने चिट्ठी आखिरी पंजप के नाम।
अब संभल जाओ फिरंगिया वरना मिट जाने को।
मालवी ने वार अब तो कर दिया इंगलैन्ड पर।
देखना अब मानचिस्टर भी उजड़ जाने को है॥

गजल २०

बात दुर्योधन को कुन्ती की भली लगती नहीं।
सच कहा है जोंक पत्थर में कभी लगती नहीं॥
इसके समझाने में मुझसा दूत भी नाकाम है।
अब बता कुन्ती तेरा पांडवों को क्या पैगाम है॥
(कुन्ती) मेरे वीरों से यह कह दो वक्त सिर पर आगया
दूध को मेरे सफल करने का अवसर आगया॥
खेल जाओ जान पर अपने प्रण के वास्ते।
छत्रानी सूरमा जनती है रण के वास्ते॥

हसरते दिल २१

देखना है किस कदर दम खंजरे कातिल में है।
अब भी यह अरमान यह हसरत दिले बिस्मिल में है॥
गैर के आगे न पूछो इस में है एक खास राज।
फिर बता देंगे तुम्हें जो कुछ हमारे दिल में है॥
खींचकर लाई है सबको कत्ल होनेकी उमीद।
आशिकों का आज जमघट कूचए कातिल में है॥

फिरते हो क्यों हाथ में चारो तरफ खंजर लिये।
आज है यह क्या इरादा आज यह क्या दिल में है॥
एक से करता नहीं क्यों दूसरा कुछ बातचीत।
देखता हूं मैं जिसे वह चुप तेरी महफिल में है॥
उन पर आफत आयगी इक रोज पर ही आयगा।
वह तो दुनिया में नहीं जो कूचए कातिल में है॥
एक जानिब है मसीहा एक जानिब है कजा।
किस कशमकश में पड़ी है जान किस मुशकिल में है।
जख्म खाकर भी उसे है ज़ख्म खाने की हवस।
हौसला कितना तड़फने का तेरे बिस्मिल मे है॥

गज़ल २२

वतनकी आबरू का पास देखें कौन करता है।
सुना है आज मकतल मे हमारा इम्तहां होगा॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से ए दर्दे वतन हरगिज।
न जाने बाद मुर्दन मैं कहां और तू कहां होगा॥
शहीदोंकी चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरनेवालों का यही बाकी निशां होगा॥
कभी वह भी दिन होगा जब अपना राज्य देखेंगे।
जब अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमां होगा॥

गजल २३

पहिनाने वाले अगर बेड़ियां पहनाएंगे ।
खुशी से कैद के गोशे को हम बसायंगे ॥
जो सन्तरी वीर जिन्दा के सो भी जाएंगे ।
यह राग गाके उन्हें नींद से जगाएंगे ॥
तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले ।
न ले वहिश्त भी हम होमरूल के बदले ॥
सन्तरी देख कर इस जोशको शरमायंगे ।
राग जंजीर की झन्कार में हम गाएंगे ।

गज़ल २४

सितमगर अब यह आलम है तेरे बीमारे फुरकत का ।
लबों पर दम है दिल में बलवला शौके शहादत का ॥
मेरी दीवानगी पर चारागर हैरां न हो इतना ।
यही अन्जाम होना चाहिये नाकाम उलफत का ॥
बुताने संगदिल सुनते नहीं फरियाद बेकस की ।
निराला ढंग है उन खुदपरस्तों की हकूमत का ॥
मिटा कर जानों दिल अपना किसी जालिम जफाजू पर ।
तमाशा अपनी आंखों देखता हूं अपनी किस्मत का ॥
हविस हूर की हो जिस में दिलाये याद गिलमां की ।
आनावे शेख मैं कायल नहीं ऐसी रियाजत का ॥
बर आएं हसरतें हासिल सकूने कल्ब मुज़तर हो ।

कहां ऐसा मुकद्दर हाय मुझ बरगश्ता किस्मत का ॥
मज़ा जब है कि वह कह उठें 'अशफाक' उनका क्या कहना
गजल है या मुरक्का है तेरे वक्ते मुसीबत का ॥

गज़ल २५

सही जज़बाते उल्फत भी कहीं मिटने से मिटते हैं।
अबस हैं धमकियां दारो रसन की और ज़िन्दां की ॥
वह गुलशन जो कभी आबाद था गुज़रे ज़माने में।
मैं शाखे खुश्क हूं हां! हां!! इसी उजड़े गुलिस्तां का ॥
नहीं तुम से शिकायत हम सफीराने चमन मुझको।
मेरी तकदीर ही में था कफ़स और कैद ज़िन्दां की ॥
करो जब्ते मुहब्बत गर तुम्हें दावाए उलफत है।
खमोशी साफ़ बतलाती है यह तलवार जानां की ॥

गज़ल २६

खौफ आफत कहां दिलमें रिया आयेगी।
बात सची है जो वह लब पै सदा आयेगी ॥
दिल से निकलगी न मरके भी वतनकी उलफत।
मेरी मिट्टी से भी-खुशबूए वफा आयेगी ॥
मैं उठा लूंगा बड़े शौक से उसको सर पर।
खिदमते कौम में जो रंजो बला आयेंगी ॥
सामना सब्रो शुजाअत से करूंगा मैं भी।

खीच के मुक़तल जो कभी तेग़े जफ़ा आयेगी ॥
ग़ैर ज़ालिम और खुदी से जा करेगा हमला ।
मेरी इमदाद को खुद जाते खुदा आयेगी ॥
आत्मा हूं मैं बदल डालूंगा फ़ौरन चोला ।
क्या बिगाड़ेगी अगर मेरी क़ज़ा आयेगी ॥
खूब रोयेगी तेरे लाशे पै शमा बादे शफ़क़ ।
ग़म मनाने के लिये काली घटा आयेगी ॥
अब्र तर अश्क बहायेगी मेरे लाशे पर ।
ख़ाक उड़ाने के लिए बादे सबा आयेगी ॥
जिन्दगी में तो मिलने से झिझकती है फलक ।
खलक को याद मेरा बादे फ़ना आयेगी ॥

मर जांयेग २७

देश हित पैदा हुए हैं देशपर मर जायेंगे ।
मरते मरते देश को जिन्दा मगर कर जायेंगे ॥
हमको पीसेगा फ़लक चक्की में अपनी कब तलक ।
ख़ाक बनकर आंख में उसकी बसर हो जायेंगे ॥
कर रही बर्गे खिज़ां को बादे सर सर दूर क्यों ।
पेशवाए फ़स्ले गुल हैं खुद समर कर जायेंगे ॥
ख़ाक में हम को मिलाने का तमाशा देखना ।
तुख़्म रेज़ी से नये पैदा शजर कर जायेंगे ॥

सौ सौ आँसू जो रुलाते हैं हमें उनके लिये ॥
अश्क के सैलाब से बरपा हश्र कर जायेंगे ॥
गर्दिशे गरदाब में डूबे तो कुछ परवा नहीं।
बहरे हस्ती में नई पैदा लहर कर जायेंगे ॥
क्या कुचलते हैं समझ कर वह हमें बर्गे हिना।
अपने खूं से हाथ उनके तर बतर कर जायेंगे ॥
नक्शे पा है क्या मिटाना तू हमें पीरे फ़लक।
रहबरी का काम देंगे जो गुज़र कर जायेंगे ॥

ग़ज़ल २८

दरियानी न हैरानी न थे पांव में छाले।
हम भी थे कभी आह बड़े नाज़ों के पाले ॥
छुल खादा मिटे उड़ गई आज़ादी औ राहत।
अल्ला यह दिन अपने तो दुश्मन पै भी न डाले ॥
माना है मिटाया है हमें आह उन्हीं ने।
कर बैठे थे हम जानो जिगर जिनके हवाले ॥
हम ने तो हमेशा तेरी खुशनूदी ही चाही।
खुद बिगड़े मगर काम तेरे सारे सम्भाले ॥
उसका यह सिला हमको मिला उफरी मुहब्बत।
बर्बाद किया डाल दिये जान के लाले ॥
बेबस हुए ज़लील हुए मिट तो चुके हम।

अब और क़यामत भी जो ढाना हो सो ढाले ॥
सौगन्ध है तुझको तेरे उस जौरो जफा की।
जी भर के हमें जितना सताना हो सता ले ॥
किस्मत का कभी अपने भी चमकेगा सितारा।
हम भी कभी देखेंगे आजादी के उजाले ॥
बदलेगी लहर तब मेरे सिर चढ़ के कहेगी।
था जहर पै केचुल से थे लाचार थे काले ॥

* गजल २१

देशकी खातिर मेरी दुनियामें यह तावीर हो।
हाथ में हो हथकड़ी पैरों पड़ी जँजीर हो ॥
शूली मिले फांसी मिले या कोई भी तदबीर हो।
पेट में खंजर दुधारा या जिगर में तीर हो ॥
आंख खातिर तीर हो मिलती गले शमशीर हो।
मौत की रक्खी हुई आगे मेरे तस्वीर हो ॥
मरकर भी मेरी जान पर जहमत बिला ताखीर हो।
और गर्दन पर धरी जल्लाद ने शमशीर हो ॥
खासकर मेरे लिये दोज़ख नया तामीर हो।
अलगरज जो कुछ हो मुमकिन वह मेरी तहकीर हो ॥
हो भयानक से भयानक भी मेरा आखीर हो।
देश की सेवा हो लेकिन एक मेरी तकसीर हो ॥

इस से बढ़कर और दुनियामें अगर ताज़ीर हो।
मंजूर हो ! मंजूर हो !! मंजूर हो !!! मंजूर हो !!!!
मैं कहूंगा फिर भी अपने देशका शेदा हूं मैं।
फिर करूंगा काम दुनियामें अगर पैदा हुआ ॥

गज़ल २०

मुर्गे दिल मत रो यहां आंसू बहाना है मना।
अन्दलीबोंका कफ़स में चहचहाना है मना ॥
हाय जल्लादो तो देखो कह रहा सैय्याद यह।
वक्त जिबहा बुलबुलों को तड़फड़ाना है मना ॥
वक्त ज़िबहा जानवर को देते हैं पानी पिला।
हज़रते इन्सान को पानी पिलाना है मना ॥
मेरे खूंसे हाथ रंगकर बोले क्या अच्छा है रंग।
अब हमें तो उम्र भर मरहम लगाना है मना ॥
ऐ मेरे ज़ख्मे जिगर नासूर बनना है तो बन।
क्या करूं इस ज़ख्मपर मरहम लगाना है मना ॥
खूने दिल पीते हैं अक्सर खाते हैं लख्ते जिगर।
इस कफ़समें कैदियों को आबोदाना है मना ॥

---

* यह कविता पं० रामप्रसाद "बिस्मिल" ने शाहजहांपुर भारत दुर्दशा नाटक में गाई थी तब जनता की आंखों में से पानी बहने लगा था, पण्डित जी को एक स्वर्ण का पदक और पारितोषिक मिला था।

गज़ल ३१

तू वह मये खूबी है ऐ जलवये जनाना ।
हर गुल है तेरा बुलबुल हर शमा है परवाना ॥
सरमस्तो में भी अपनी साक़ी के कदम पर हो ।
इतना तो करना करना ऐ लग़ज़िशे मस्ताना ।
या रब इन्हीं हाथों से पीते रहें मस्ताना ।
या रब वही साकी हो या रब वही पैमाना ॥
आंखें हैं तो उसकी हैं किस्मत है तो उसकी है ।
जिसने तुझे देखा है ऐ जलवये जनाना ॥
छेड़ो न फरिश्ते तुम जिक्रे गमे जनाना ।
क्यों याद दिलाते हो भूला हुआ अफसाना ॥
यह चश्मे हकीकी भी क्या तेरे सिवा देखें ।
सिजदे से हमे मतलब काबा हो या बुतखाना ॥
साकी को दिखा देंगे अन्दाज़ फकीराना ।
टूटी हुई बातल है टूटा हुआ पैमाना ॥

गजल ३२

मेरा रङ्ग दे बसन्ती चोला ।
इसी रङ्ग में रङ्ग के शिवा ने मां का बन्धन खोला ।
यही रंग हल्दी घाटी में खुल कर के था खेला ॥
अब बसन्त में भारत के हित वीरोंका यह मेला ।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ॥

ग़ज़ल ३३

अपने मतलब के यह गोरे किस कदर हुशियार हैं।
हिकमते अमली के मानों यही ठेकेदार हैं॥
धोखा देने से न चूकेंगे यह अपने बाप से।
बेवफ़ा वज़न फरबो झूठे और मक्कार हैं॥
वक्त जब इन पर पड़े तब गिड़गिड़ा कहने लगें।
जां बजा ओ हिन्दियो हम मुफलिसो लाचार हैं॥
और जब गुज़रे मुसीबत तब यह कहते हैं हरीफ।
सब के सब यह हिन्दवाले बागी और गद्दार हैं॥
क्या किया है आपने अबतक हमारे वास्ते।
जिस से हम समझें हमारे आप हो गमख़्वार है॥
कितनों को रोटी दुवक्ता मिलती है भर भर के पेट।
कितने तालिमयाफ्ता यहांपर सरें रुजगार हैं॥
कहते हैं काबिल नहीं हो तुम हुकूमत के अभी।
क्योंकि हिन्दू और मुसलिम बानीये तकरार हैं॥
क्या गरज़ तुमको जनाबे खुश्रा हम कुछ भी करें।
किस्से कजिओ के हमारे आप ज़ुम्मेवार हैं॥
महिरबां तशरीफ ले जाओ यहां से जल्द अब।
आपके हीले बहाने सबके सब बेकार हैं॥
हिन्दियों अब इनपर यकीन करना छोड़ दो।
क्योंकि यह सब लालमुंहे बंदर बड़े बदकार हैं॥

गजल ३४

हम सरें दार बसर शौक जो यह करते हैं।
ऊँचा सर कौम का हो नजर यह सर करते हैं
सूख जाये न कहीं पौदा यह आजादी का
खून से अपने इसे इसलिये तर करते हैं
इस गुलामी में तो कोई न ; खुशी आई नज़र।
खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं॥
सर तन से जुदा कर दो ये है हाथ तुम्हारे।
पर रूह से जज़बाते जुदा कर नहीं सकते॥

गजल ३५

भूखे प्राण तजैं भले केहरि खरु नहीं खाहिं।
चातक प्यासे हो रहे बिन स्वांती न अघाहिं॥
बिनि स्वाती न अघाहिं हंस मोती ही खावें।
सती नार पतिव्रता नेक नहि चित्त डिगावे॥
तिमि प्रताप नहीं डिगे होहिं चह सब किन रूखे।
अरि सन्मुख नहिं नवें फिरें चाहे बन बन भूखे॥

---

* स० राजेन्द्रनाथ 'लहरी' ने यह फांसी पर जाते समय गाई थी।

युवकों का जयघोष ३६

कुछ सोच न कर लो कटती हैं सब कड़ियां तेरी गुलामी की ।
यह हम से हो सकता ही नहीं कि सूरत देखें नाकामी की ॥
क्या फिक्र तुझे कैसे कटे हम नन्हें नन्हें बेचारों से ।
जंजीर कड़ी जो कट न सकी इन बूढ़ों के औजारों से ॥
हम जती सती है ऐ माता, हम तेरा भार बढ़ायेंगे ।
जो हमने तुझको वचन दिया वह पूरा कर दिखलायेंगे ॥

मरना सीखो ग० ३८

देश के वास्ते कुछ काम भी करना सीखो ।
तुमको मरना नहीं आता अभी मरना सीखो ॥
हर तरफ मुफ्त को बेकार भटकते क्यों हो ।
पांव मंजिल की तरफ दौड़ के धरना सीखो ॥
डरते हो खंजरे कातिल से ये किस दिन के लिये ।
तुम जो बिस्मिल हो तो फिर शौक से मरना सीखो ॥

फकीर की फेरी ग ३६

यदि तुझे देश की चिन्ता है तो हिन्दू जाति जगा बाबा ।
यह ऊंच नीच के भेद भव का भारी भूत भगा बाबा ॥
फंस दया अहिंसा फंदे में हो गये हीजड़े पक्के हैं ।
कुछ जगे जोश मर्दों कैसा अब ऐसा जोर लगा बाबा ॥
बाईस कोटि हैं तो भी यह मर रहे मौत कुत्तों कैसी ॥

इस जग में नहीं रहा कोई इनका मां बाप सगा बाबा ॥
दे इन्हें गीतांजलि या भूषण सी कविताई कर ।
लचका-लचका कमर "चका चक" गंदे गीत नगा बाबा ॥

गजल ४०

मुसीबत आ तेग हम दिल से इस्तकबाल करते हैं ।
मये शमशीर सीना औ जिगर को ढाल करते हैं ॥
खबर दाम अहले हिन्दोस्तां की बनती है यही सबज़ा ।
जला कर इस्त में जिस्म घास को पामाल करते हैं ॥
हम गाढ़े पसीने की कमाई दें तो क्या ग़म है ।
यहां के जानवर तक नज़र अपनी खाल करते हैं ॥
खुदा की मेहरबानी जानते हैं हिन्द के मुफलिस ।
मुल्क इनसे जो आये दिन वबा औ काल करते हैं ॥
कोई और इस तरह क्या फाग खेलेगा लंगोटी में ।
बिलायत को तवंगर हिन्द के कंगाल करते है ॥
है मौसम फाग का खेलेंगे अब होली इसी से हम ।
ज़माने हिन्द को खूने जिगर से लाल करते हैं ॥

गजल ४१

पूछते क्या हो कि क्या अरमां हमारे दिल में है ।
कुछ वतन की याद में आहे दमें बिसमिल में है ॥
साकिनाने बाग़ आलम सब रिहाई पाचुके ।

एक हमीं आफत मारे कैद की मुश्किल में है ॥

देश वालो दामने हिम्मत कभी छोड़ो नहीं ।

इम्तहाने इश्क़ की हम पहिली ही मंजिल में हैं

आही पहुंचेगी किनारे किश्तीए भारत कभी ।

कोई दममें देखना हम दामने साहिल में हैं ॥

हो जायेगा ४२

गर न कोई गुल खिला वीरां चमन हो जायेगा ।

पाक दामन खून में काला कफन हो जायेगा ॥

हिन्दके गुलशन को सींचा गर जो अपने खून से ।

ग़म नहीं कुछ जो मेरा छलनी बदन हो जायेगा ॥

शान इङ्गलिस्तान क़ायम जुल्म से होगी नहीं ।

लाल छींटों से तेरा मैला बदन हो जायेगा ॥

हिन्द के पौदे क़त्ल जो जुल्म के खंजर से हों ॥

चन्द दिन में फिर वही बागे अदन हो जायेगा ।

आबरू आख़िर मिलेगी इस जमाने में उसे ॥

केसरी बाने में जो शैदा वतन हो जायेगा ।

जो हुये 'प्रेमी,, फिदा अपने वतन की आन पर ॥

शक नहीं इस कशमकश में फिर अमर होजायेगा ॥

तरानये फ़लक ४३

बाग़ से सर सर का झोका, आशियाना ले गया ।

अन्दलीबों को कफ़स में आबोदाना ले गया॥
कुछ गुले गुलचीं का शिकवा बुल बुले भारत न कर।
तुझको पिञ्जरे में तेरा यह चहचहाना ले गया॥
कौन कहता है जबर्दस्ती से हम पकड़े गये।
ज़ेल में ख़ुद हमको शौके जेलखाना ले गया॥
क्यों घटा अदबार की छाये न अहले हिंद पर।
खींच कर यूरोप है सब मालो ख़ज़ाना ले गया॥

गजल ४४

न कोई इंगलिश न कोई जर्मन न कोई रशियन न कोई तुर्की।
मिटाने वाले हैं अपने हिन्दी जो आज हमको मिटा रहे हैं॥
जिसे फना वह समझ रहे हैं बका का है राज इसी में मजमिर।
नहीं मिटाने से मिट सकेंगे वो लाख हमको मिटा रहे हैं
ख़मोश हसरत' ख़मोश 'हसरत' अगर है जजबा वतन का दिल में
सजा को पहुंचेंगे अपनी बेशक जो आज हमको सता रहे हैं॥

गजल ४५

सर फरोशाने वतन जेल में घर रखते हैं।
जो हैं जांबाज हथेली पै वह सर रखते हैं॥
खौफ कर जुल्म नहीं कि हम निर्दोषी हैं।
अपने नाले में कयामत का असर रखते हैं॥
क्यों डराते हो हमें तेगों से तलवारों से।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 771
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

हम भी अर्जुन के अभी तीर तबर रखते हैं ॥

गज़ल ४६

बद्दुआ ज़ालिम न ले तू बेकसो लाचार की ।
तुझको खा बैठेगी आह मुझ बेकसो ग़मख़्वार की ।
हमने जांबाज़ों को करना क़त्ल क्या कुछ खेल है
धार खुंडी पड़ गई ज़ालिम तेरी तलवार की ॥
दम तेरा भरते थे जो अब वह भी बरगश्ता हुए ।
खुल गयी सारी हक़ीक़त सब से तेरे प्यार की ॥
हरकसो नाकस की गर्दन पर इसे रखना थी ।
कदर अपने हाथ खोई तुमने ख़ुद तलवार की ॥
बेकसों के खूनमें रंगना इसे अच्छा नहीं ।
रोज़ महशर ख़ून उगलेगी ज़बां तलवार की ॥
आज़ाद कर पीछा छुड़ा लो वरना फिर पछताओगे ।
खैर पड़ जाएगी तुमको मांगनी फिर जान की ॥
हाथा पाई और अमानत में खयानत गर रही ।
धक दम जायेगी मिट सब आबरू सरकार की ॥
फिर 'मुसाफिर' कौन सिखलाता तुझे जांबाज़ियां ।
कुछ नज़र की महरबानी कुछ तेरी तलवार की ॥

ग़ज़ल नं० ४७

हम तो बैठे हैं अपने हाई जान के लाले ।

हो दिलमें खुशी जिनके वह अरमान निकाले ॥
घरके चिराग़ बुझ गये जो करते उजाले ।
लाचार पड़े आज हैं बेदर्द के पाले ॥
नामर्द डायरान के ज़ुलमो ज़ुनून से ।
अब तक ज़िमीं है तर मेरे बच्चों के खून से ॥
जर्मन थे या अफ़गान थे या कोई ग़दर था ।
हथियार बन्द फ़ौज को क्या खौफो खतर था ॥
बेचारे हिंद बच्चों पै जो ज़ुल्मो कहर था ।
ग़म से झुका उसी के लिये सत्य पै सर था ॥
उन पर चलाईं गोलियां लानत है क़ौम पर ।
थूकेगा सब ज़माना इस हरकत से कौम पर ॥
यूरूप की शान जाती थी जब आनके बदले ।
वह वक्त मुसीबत दिये सामान के बदले ॥
किसी को यह खबर थी ज़री जान के बदले ।
बरसेंगे गोले हम पर उस अहसान के बदले ॥
पढ़ लीजे कारनामे इस शाइस्तः कौम के ।
जलियानवाला बाग़ में खूं से लिखे हुए ॥

गज़ल ४८

न किसी की आंख का नूर हूं न किसी के दिल का क़रार हूं ।
जो किसी के काम न आ सके वह मैं एक मुश्ते ग़ुबार हूं ॥

न दवाये दर्दे जिगर हूं मैं न किसी की मीठी नजर हूं मैं।
न इधर हूं मैं न उधर हूं मैं न शकबे हूं न क़रार हूं॥
मैं नहीं हूं नग़मये जां फ़िज़ां मेरा सुन के कोई करेगा क्या॥
मैं बड़े वियोगी की हूं सदा ओ बड़े दुखी की पुकार हूं;॥
न मैं किसी का हूं दिलरुबा न किसी के दिल में बसा हुआ।
मैं ज़मीन की पीठ का बोझ हूं ओ फलक के दिलका गुबार हूं॥
मेरा बख्त मुझ से बिछुड़ गया मेरा रंग रूप बिगड़ गया।
जो चमन ख़िज़ा से उजड़ गया मैं उसी का फसले बहार हूं॥
पये फ़ातिहा कोई आये क्यों कोई शमा लाके जलाये क्यों॥
कोई चार फूल चढ़ाये क्यों कि मैं बेकसी का मजार हूं।
न अख़तर मैं अपना हबाब हूं न अख्तरों का रक़ाब हूं।
जो बिगड़ गया वह नसीब हूं जो उजड़ गया वह दयार हूं॥

बेचारे "आजादी के दीवानों" के पास माता की सेवा को धरा ही क्या है, बलिवेदी पर अपने खून की श्रद्धांजलि चढ़ा कर भारत माता की गोद में सदा के लिये सो जाते हैं, कोई कुछ भी कहे उन के काम को परमात्मा देखता है।

श्रीयुत भाई भगवतीचरण जी, B. A.

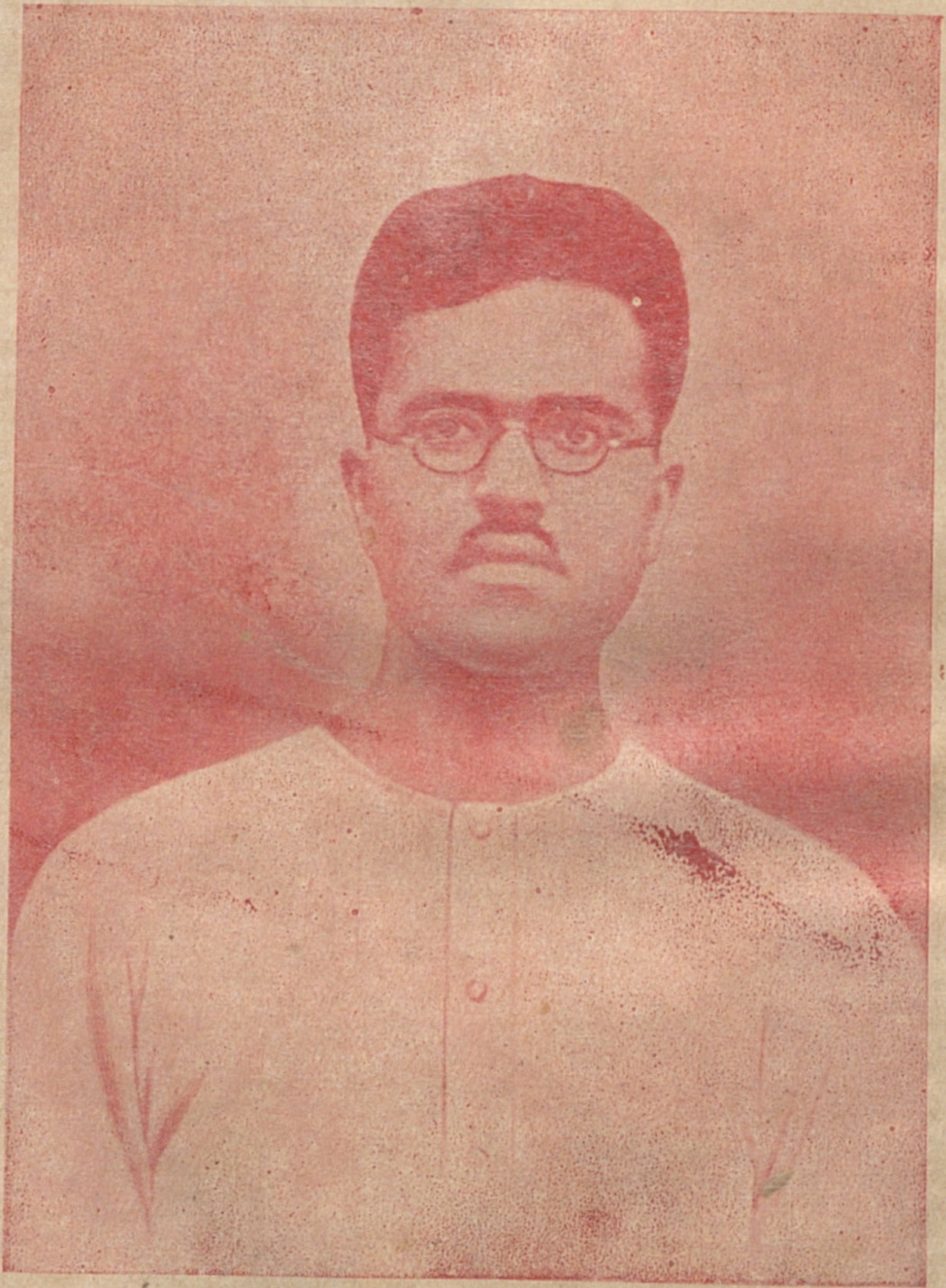

ऐतिहासिक पुष्पांजलि	।॥)	हिन्दू संगीत रत्नाकर	१)
काकोरी के भेंट	१॥)	झांसी की रानी	॥)
अत्याचारी शासन का अन्त	॥≈)	स्त्री गीत संग्रह	॥)

पुस्तकें मिलने का पता—लक्ष्मण "पथिक"

पथिक एण्ड कम्पनी, देहली ।